यीशुः
हमारा छुड़ाने वाला

यीशु के प्रायश्चित (atonement) की कहानी में हृदयों को पिघलाने और पापियों को यीशु के लिए जीने को विवश करने की शक्ति है। इतना महत्वपूर्ण विषय कोई और कैसे हो सकता है ?

अंग्रेज़ी भाषा के शब्द ''atone''[1] का अर्थ सुधारना, मसले का हल करना, या गलत व्यक्ति की संतुष्टि करना है, जिससे दो अलग हुए लोग ''एक'' हो जाएं। मूसा ने दो झगड़ रहे व्यक्तियों में ''मेल करने'' (प्रेरितों 7:26) का प्रयास किया था। प्रायश्चित के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''atonement'' मूलतः ''*at one* ment'' है; इसका अर्थ समझौता, संधि या मेल है।

अंग्रेज़ी के KJV अनुवाद के नये नियम में एक ही बार ''atonement'' (रोमियों 5:11) शब्द आने के लिए ज़िम्मेदार यूनानी शब्द[2] का मूल अर्थ सिक्कों की तरह समान मूल्यों का विनिमय है। सही विनिमय से हिसाब ठीक होता है, समाधान हो जाता है और क्षतिपूर्ति भी हो जाती है।

इब्रानी शब्द[3] के अनुवाद ''atonement'' का मूल अर्थ है ''ढकना।'' यह उस राल का वर्णन करता है जो नूह ने जहाज पर लगाई थी। यह एसाव को शांत करने के लिए भेजी याकूब की भेंट का वर्णन भी करता है: ''यह भेंट जो मेरे आगे-आगे जाती है, इसके द्वारा मैं उसके क्रोध को शांत [उसका मुंह ढक] करके तब उसका दर्शन करूंगा'' (उत्पत्ति 32:20)। इस शब्द का अर्थ अब ''पाप के लिए ढकना, संतुष्टि, शांति, प्रायश्चित'' हो गया है।

यूनानी शब्दों[4] से मिले शब्द ''पाप'' का अर्थ है ''निशाने से चूकना'' (जैसे तीर-अंदाजी में) अर्थात परमेश्वर के सामने गलत होना और दोषी ठहरना। क्योंकि परमेश्वर पाप को सहन नहीं कर सकता है (व्यवस्थाविवरण 32:3, 4; हब्बकूक 1:13; यूहन्ना 8:21), इसलिए उसके लिए पापियों को अदन से निकालना आवश्यक हो गया था। अपने सृजनहार से मनुष्य की दूरी का कारण पाप ही था। पाप स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता (यूहन्ना 8:21, 24; प्रकाशितवाक्य 21:27), इसलिए विश्व की सबसे जटिल समस्या मेल, संतुष्टि प्रायश्चित की ही थी जिससे पापी लोग अन्ततः स्वर्ग में उसकी उपस्थिति के लिए बहाल हो सकते हैं।

छुटकारा आवश्यक है

केवल आदम और हव्वा ने ही परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया था। प्रत्येक दूसरा व्यक्ति जिसे अपने दिमाग का इस्तेमाल करने का अधिकार है और जो सही और गलत का चुनाव करने के योग्य है, वह धर्म के निशान से चूक गया है (''सब प्रकार का अधर्म तो पाप है''; 1 यूहन्ना 5:17)। सब लोग परमेश्वर के मानक से गिर गए हैं (रोमियों 3:23)। यीशु के सिवाय कोई भी मनुष्य यह चुनौती नहीं दे सका कि ''तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है?'' (यूहन्ना 8:46)।

मनुष्य की इतनी उन्नति के बावजूद भी, तीन हज़ार वर्ष पुराने प्रश्न का आज भी उत्तर नकारात्मक ही है, ''कौन कह सकता है कि मैंने अपने हृदय को पवित्र किया; अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूं?'' (नीतिवचन 20:9)। यीशु के सिवाय ऐसा दावा और कोई नहीं कर सकता है। पाप की विश्वव्यापकता दिखाती है कि प्रायश्चित की सीमित शिक्षा सच्चाई के सामने कम पड़ जाती है। विश्वव्यापी पाप के विरुद्ध केवल विश्वव्यापी प्रायश्चित ही प्रभावित हो सकता है। यदि परमेश्वर पक्षपात नहीं करता है (प्रेरितों 10:34) और यदि वह अपने सब जीवों से प्रेम करता है, तो पाप के लिए प्रायश्चित की उसकी योजना में सभी मनुष्य शामिल होने चाहिए।

छुटकारा व्यक्तिगत है

पाप विरासत में नहीं मिलता है और न ही यह संक्रामक है। हर पापी ''अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है'' (याकूब 1:14)।[5] इस कारण, पाप के लिए यीशु का प्रायश्चित कितना भी व्यापक क्यों न हो,परन्तु यह प्रभावी तभी होता है जब प्रत्येक व्यक्ति उस प्रायश्चित के प्रबन्धों को व्यक्तिगत रूप से मानता है। यदि पाप व्यक्तिगत है, तो प्रायश्चित की सामर्थ भी व्यक्तिगत ही होगी। यदि पाप व्यक्तिगत है, तो मेल भी व्यक्तिगत ही होना चाहिए। फिर तो, जब तक कोई व्यक्ति स्वयं इसे ग्रहण नहीं करता, प्रायश्चित व्यर्थ ही है। अपने बच्चों के लिए माता-पिता की ओर से इसे ग्रहण करना असम्भव है, और किसी दूसरे के स्थान पर किसी मित्र द्वारा बपतिस्मा लेना[6] असम्भव है। ''सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा'' (रोमियों 14:12)।

छुटकारा केवल मसीह में है

पाप की मजदूरी मृत्यु और परमेश्वर की उपस्थिति से निकाले जाना है। यदि परमेश्वर मनुष्य की दुष्टता को अनदेखा करके उसके पापों के बावजूद उसे स्वर्ग में ले जाता है तो उसने धर्मी नहीं ठहरना था (व्यवस्थाविवरण 32:1-4)। फिर भी, परमेश्वर हमेशा मनुष्य से प्रेम करता है और उसके उद्धार के लिए तड़पता है (यहेजकेल 33:11; यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर धर्मी रहकर पापियों को धर्मी कैसे बना सकता था? (देखिए रोमियों 3:25ख, 26।) स्वर्ग की समस्या यही थी।

पुरखाओं की व्यवस्था को रखना अपर्याप्त था

परमेश्वर की व्यवस्था में पशुओं के बलिदान की आज्ञा दी गई थी और मनुष्य को लहू बहाने या किसी भी प्रकार का लहू खाने की मनाही की गई थी। पुरखाओं को स्वर्ग के मार्ग पर रखने के लिए ये नियम आवश्यक थे। यदि इन नियमों को मानने से पाप का प्रायश्चित हो जाता, तो स्वर्ग की समस्या का समाधान हो जाना था परन्तु इन विधियों से इसका समाधान नहीं हुआ था।

मूसा की व्यवस्था को रखना अपर्याप्त था

मूसा की व्यवस्था को तुच्छ जानने वाले (व्यवस्थाविवरण 27:26; इब्रानियों 10:26, 27) और इसे पूरा न करने वाले के लिए शाप था। इसे निष्कपटता से मानने वालों (लूका 1:6; फिलिप्पियों 3:6) पर भी पाप के चिह्न रह जाते थे, क्योंकि जानवरों के लहू के लिए इन्हें मिटाना असम्भव था (इब्रानियों 10:4)। ''तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरोध में है ? कदापि न हो ? क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सकती, तो सचमुच में धार्मिकता व्यवस्था से होती'' (गलतियों 3:21)।

परमेश्वर और मसीह में विश्वास रखना और आज्ञा मानना अपर्याप्त है

पचासी वर्ष के बूढ़े अब्राम में विश्वास का एक महान कार्य देखा जाता है जिसने विश्वास किया था। परमेश्वर उसकी संतान को सितारों की तरह बढ़ाएगा (उत्पत्ति 15:6)। अब्राहम के इस विश्वास की प्रशंसा की जाती है और नये नियम में हमारे लिए इसे एक उदाहरण के रूप में ठहराया जाता है (रोमियों 4:16-24; गलतियों 3:16-29)। यदि विश्वास करने (देखिए यूहन्ना 6:29) और आज्ञा मानने के काम से पाप का प्रायश्चित हो जाता, तो स्वर्ग की समस्या का समाधान हो जाना था। स्वर्ग में जाने के लिए (प्रकाशितवाक्य 2:10) आज्ञाकारी विश्वास (रोमियों 1:5) जो प्रेम से कार्य करता है (गलतियों 5:6) आवश्यक है, परन्तु वास्तव में मानवीय जीव द्वारा किया गया कोई भी कार्य उसे धर्मी नहीं बना सकता है। जितनी आवश्यक परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता है, उतना ही आवश्यक यह है कि मनुष्य की आज्ञाकारिता स्वर्ग की समस्या का समाधान नहीं था।

भले कार्य करना अपर्याप्त है

भले कार्यों का परमेश्वर की दृष्टि में महत्व है और वे आवश्यक हैं (मत्ती 25:31-46), परन्तु वे मनुष्य के पापों के लिए प्रायश्चित नहीं कर सकते हैं। पिता जिसने अपने पुत्र के हर बार आज्ञा तोड़ने पर द्वार में कील ठोंक दी थी, जितनी बार उस पुत्र ने आज्ञा मानी उतनी ही बार उसने कील निकाल दी, जिससे अभी भी एक बुरा दृश्य था कि द्वार में छेद पड़ गए थे। आज्ञाकारिता आवश्यक है, परन्तु यह आज्ञा न मानने को दूर नहीं कर देती। एक वेश्या बेशक अपने पड़ोसियों की आवश्यकता के समय उनके लिए अच्छी हो सकती है, परन्तु उसका दोष तो बना ही रहता है। एक चोर निर्धनों को धन देने के बावजूद भी चोर ही रहता

है। अपने शाप को दूर करने के लिए और अधिक प्रार्थना करने वाला व्यक्ति गलत ढंग अपना रहा है। पापियों के लिए उद्धार जमा-घटाव के ढंग से नहीं पाया जा सकता। स्वर्ग की (और संसार की) सबसे बड़ी समस्या का समाधान वह नहीं है।

धर्म का हस्तान्तरण असम्भव है

कुछ लोगों का विचार है कि मनुष्य की निराशा, दण्ड की स्थिति के लिए परमेश्वर ने जो समाधान निकाला है वह मसीह की धार्मिकता को मानवीय जीवों में हस्तान्तरण करना था। यदि यह सम्भव होता तो मसीह को कभी स्वर्ग छोड़ने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह तो पृथ्वी पर आने से पहले भी धर्मी था।

बेशक मसीह के कारण हम धर्मी ठहरते हैं (यिर्मयाह 23:6; 1 कुरिन्थियों 1:30), और उसमें धर्मी बनाए जाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:21), परन्तु धार्मिकता एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक हस्तान्तरित नहीं होती है। मसीह के प्रायश्चित के बिना हम धर्मी नहीं ठहराए जा सकते, परन्तु न तो पवित्र शास्त्र और न ही तर्क सुझाव देता है कि यीशु का धर्मी होना हमें भी धर्मी ठहराता है।

धार्मिकता अर्थात धर्मी होने का गुण, ऐसी स्थिति है जो किसी दूसरे की स्थिति के कारण पापी पर थोपी नहीं जाती बल्कि परमेश्वर की ओर से मिलती है। यदि एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में धार्मिकता के हस्तान्तरण को मान लिया जाए तो निश्चय ही परमेश्वर ने अपने पुत्र को बचाने के लिए इस पर विचार किया होगा। जैसे आदम का पाप मीरास में नहीं मिलता वैसे ही मसीह की धार्मिकता से कोई व्यक्ति धर्मी नहीं बन सकता है। स्वर्ग के समाधान के लिए कुछ और भी आवश्यक था।

विकल्प के रूप में मसीह को भेजना ही एकमात्र समाधान था

स्वर्ग की सभा में, संसार के आरम्भ से पहले (देखिए 1 पतरस 1:20; प्रकाशितवाक्य 13:8) मनुष्य के पापों को दूर करने के लिए किसी भी युग में जानवरों के बलिदानों को अपर्याप्त ठहराया गया था। परमेश्वर का इकलौता पुत्र अपनी इच्छा से मनुष्य बना ताकि वह बलिदानपूर्वक और मृत्यु के विकल्प में मर सके (इब्रानियों 10:1-10)। उसने अपने पिता से कहा ''देख, मैं आ गया हूं, ... ताकि ... तेरी इच्छा पूरी करूं'' (इब्रानियों 10:7)। पिता ने समझाया था कि उसे कोई मजबूर नहीं करता है और पृथ्वी पर पहुंचने के बाद वह अपना मन बदल ले तो उसे भयंकर अनुभव से नहीं गुजरना पड़ता। पृथ्वी पर रहते समय यीशु ने पिता की अपने पुत्र के साथ प्रतिज्ञा को स्मरण किया था (यूहन्ना 10:17, 18)।

यीशु हमारी तरह ही मनुष्य था। हम उसे क्रूस के भय से जोड़ सकते हैं और देख सकते हैं कि उसने उस नगर में जाने की ''क्यों ठानी थी'' जहां उसने मारे जाना था (लूका 9:51; 13:33)। हम समझ सकते हैं कि जब पतरस ने बहस की कि उसे मरना नहीं चाहिए और मृत्यु से बचने के लिए उसे परीक्षा में डाला गया तो यीशु ने उसे ''शैतान'' क्यों कहा (मत्ती 16:21-23)। उसके व्याकुल होने के समय हम क्रूस से उसके भय से सहानुभूति कर

सकते हैं। फिर भी हम आनन्दित होते हैं कि यह कहने के बजाय कि, ''हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा?'' यीशु ने अपने आपको यह कहने के लिए अनुशासित किया, ''परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं'' (यूहन्ना 12:27)।

गतसमनी की व्यथित परीक्षा में, यीशु भली भांति जानता था कि वह मरने से बच सकता है। वह यह भी जानता था कि वह अपने छुड़ाने के लिए स्वर्गदूतों की सेनाओं को बुला सकता है (देखिए मत्ती 26:53), परन्तु उसने अपनी इच्छा से क्रूस से इन्कार नहीं करना था। उसने गंभीर होकर क्रूस के कष्ट और अपमान से बचने की इच्छा की थी। उसने क्रूस से बचने के लिए रो-रो कर ऐसे प्रार्थना की थी कि उसका पसीना भी लहू बनकर नीचे गिरता था। यदि पिता संसार के पापों के प्रायश्चित के लिए किसी और ढंग पर विचार कर सकता, तो यीशु चाहता था कि कलवरी का कष्ट उससे टल जाए।

अपनी बुद्धि के भण्डारों की गहराई में भी, सबसे समझदार परमेश्वर को कोई ऐसी योजना नहीं मिली थी जो पर्याप्त होती। कोई भी दूसरी योजना स्वर्ग की शुद्धता और न्याय के पिता के मापदण्ड पर खरी नहीं उतरनी थी। परमेश्वर के धर्मी रहने और पापियों को धर्मी ठहराने के लिए परमेश्वर के पास केवल यही उपाय था कि संसार के पापों का बोझ यीशु के ऊपर लदा हुआ देखे। केवल तभी पापियों को दोष से छुड़ाकर पिता सम्मानित महसूस कर सकता था (रोमियों 3:23-26)। कलवरी पर करुणा और सच्चाई आपस में मिल गईं, जबकि धर्म और मेल ने एक दूसरे को चूमा था (देखिए भजन 85:10)।

सारांश

कितने धन्य हैं हम! जब परमेश्वर छुटकारे की अपनी योजना को खोल रहा था, तो स्वर्गदूत, भविष्यवक्ता और धर्मी लोग उत्सुकता से देख रहे थे कि क्या होगा। ठहराए गए समय तक, किसी आंख ने उसे नहीं देखा, किसी कान ने उसे नहीं सुना, और किसी मन ने उस दुख और प्रायश्चित के उस ढंग की महिमा की कल्पना नहीं की थी। कोई भी आने वाली उस महिमा को नहीं जान सकता था। परन्तु अब जो किसी समय एक रहस्य था, प्रकट हो चुका है। स्वर्गदूत और मनुष्य दोनों ही यीशु की मृत्यु के प्रायश्चित से पापियों के समूह को शुद्ध आत्माओं की कलीसिया बनने के लिए बुलाते हुए देखकर परमेश्वर की नाना प्रकार की बुद्धि को देख सकते हैं! धर्म का प्रत्येक भाग, पुराना हो या नया, क्रूस से जुड़ा हुआ है। जब परमेश्वर ने अपनी योजना को पूरा किया था तो वह कुछ भी भूला नहीं था। कुछ भी छूटा नहीं था जब परमेश्वर के संदेशवाहक ने यीशु और उसे क्रूस पर चढ़ाने की बात के सिवाय कुछ और न जानने की ठान रखी थी (देखिए 1 कुरिन्थियों 2:2)।

वह प्रेम जिसने परमेश्वर को योजना बनाने के लिए प्रेरित किया, वह बुद्धि जिससे यह योजना बनी और वह साहस जिसने इसे प्रभावी किया था कितने रोमांचकारी और दिल दहला देने वाले हैं। उसके अनुग्रह ने पापों के लिए एक ईश्वरीय ढक्कन उपलब्ध करवाया था। कितना दयनीय है वह मनुष्य जो अपने पापी होने की बात से अनजान है और जो प्रायश्चित की उस प्रणाली की महिमा को मूर्खता से लात मार देता है।

पाद टिप्पणियां

[1]अंग्रेज़ी भाषा का शब्द ''atone'' मध्य अंग्रेज़ी शब्द ''attone,'' ''attoon,'' ''aton'' से लिया गया है जिसका अर्थ है ''एक, सहमत।'' [2]*कैटालेज।* [3]*किपुरिम।* [4]*हता* और *हमरतनो।* [5]परमेश्वर ने मनुष्य को दो स्वभाव देकर बनाया: (1) उसका एक भीतरी मनुष्य है, जो अपने मन की व्यवस्था के पीछे चलता है (रोमियों 7:23, 24) जो परमेश्वर की व्यवस्था में आनन्दित होता है और जो स्वभाव से ही अपने आप नैतिक मामलों में सही का फैसला कर सकता है (लूका 12:57; रोमियों 2:14; 1 कुरिन्थियों 11:14)। (2) उसका एक बाहरी मनुष्य है (रोमियों 7:25) जिसका धर्म जानवरों से बढ़कर नहीं और वह अपने आपको तृप्त करने के सिवाय कुछ नहीं जानता। यह परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन नहीं है (रोमियों 8:7) और हो भी नहीं सकता, क्योंकि मांस के पास कोई तर्क नहीं है। यह अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए कि किसी भी प्रकार की नैतिक भलाई या नैतिक बुराई ही देह में वास कर सकती है (रोमियों 7:8)। प्रकृति के द्वारा ही इसे अपने आप पर छोड़ दिया गया है, मांस अपनी ही तृप्ति ढूंढ़ेगा (इफिसियों 2:3)। मनुष्य की देह का भाग अपने आप में पापी नहीं है। यह अनैतिक नहीं है, परन्तु सदाचार निरपेक्ष है; इसे पता नहीं कि सदाचार क्या होता है। यदि इसे अगुआई करने दी जाए तो यह अनैतिकता की ओर लेकर चलता है, परन्तु इसे पाप से जोड़कर नहीं बनाया गया था। जो कुछ भी परमेश्वर ने बनाया था, वह सब अच्छा था। हमारे माता-पिता हमें पाप के संसार में ले आते हैं (भजन 51:5)। हमारे माता-पिता हमें उस देश में जन्म देते हैं जहां हिन्दी या अंग्रेज़ी बोली जाती है, परन्तु भाषा हमें सीखनी पड़ती है। इसी प्रकार, व्यक्ति पाप करना सीखता है (देखिए प्रेरितों 2:8)। भजन संहिता 58:3 की तरह, भजन 51:5 एक स्पष्ट काव्य भाषा है। मूलत: हम जन्म लेते ही बोलने नहीं लग पड़ते, न ही इतनी जल्दी मार्ग से भटकते हैं; सत्य तो यह है कि जन्म लेते ही हम भटकते नहीं हैं। सही और गलत की पहचान करना सीखकर हम भटकते हैं। फिर हमें आदम के नहीं बल्कि अपने पाप परमेश्वर से अलग करते हैं (यशायाह 59:1, 2)। अंगूर हमारे पुरखाओं ने खाये हों तो हमारे दांत खट्टे नहीं होंगे (यहेजकेल 18:2, 3)। हमें अपने पुरखाओं के बहुत से दुष्कर्मों के परिणाम भोगने पड़ सकते हैं (निर्गमन 20:5), परन्तु हम कभी भी उसके दोषी नहीं होंगे (व्यवस्थाविवरण 24:16)। जब तक पाप हम में पाया नहीं गया तब तक हम सम्पूर्ण और सिद्ध थे (यहेजकेल 28:15)। प्रभु हम सब के अंदर आत्मा रचने वाला है, पापी नहीं बनाता (जकर्याह 12:1)। वह हमें इस प्रकार से बनाता है कि आरम्भ में हम, यीशु के अनुसार, स्वर्ग के लिए योग्य होते हैं (देखिए मत्ती 19:14)। रोमियों 5:12 में उनकी जो बिना दिमाग का इस्तेमाल किए या उनकी जो अपने दाहिने और बाएं हाथ में अन्तर को भी नहीं जानने की बात नहीं की गई; बल्कि यहां उनकी बात की गई है जिन्होंने स्वयं पाप किया है (रोमियों 3:9)। [6]मेरा विचार है कि 1 कुरिन्थियों 15:29 की सबसे सही व्याख्या नये नियम की सम्पूर्ण शिक्षा और अपने संदर्भ के विचार में ''मरे हुओं के [पुनरुत्थान के] लिए बपतिस्मा है।''